Indian Council of World Affairs
Sapru House, Barakhamba Road
New Delhi

आईसीडब्ल्यूए अतिथि खंड

उज़्बेक-भारतीय सहयोग के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में विकास की संभावनाएं

दिलोरोम ममतकुलोवा
रिसर्च फेलो
इंस्टीट्यूट ऑफ स्ट्रैटजिक एंड इंटर-रिजनल स्टडीज उज़्बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति के अधीन

13 दिसंबर 2018

आजकल, उज़्बेकिस्तान और भारत द्विपक्षीय संबंधों को उच्च स्तर पर लाने में परस्पर रुचि जाहिर किया है, जो मैत्रीपूर्ण संबंधों की ऐतिहासिक परंपराओं के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। जाहिर है, हाल की उच्च-स्तरीय आधिकारिक वार्ताओं, जिसके दौरान दोनों देशों के बीच कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए थे, से यह साबित भी होता है। निश्चित रूप से, सितंबर में समरकंद में आयोजित 'भारत और मध्य एशिया वार्ता' की हालिया बैठक समग्र रूप से उज़्बेकिस्तान और मध्य एशिया के साथ सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत के हितों की पुष्टि करती है।

अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ यह स्वीकार करते हैं कि मध्य एशिया में क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के बढ़ते रुझान से उज़्बेकिस्तान के साथ भारत की व्यापक बातचीत को बढ़ाने के अभूतपूर्व अवसर खुले हैं। मौजूदा समय में दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी पर संयुक्त बयान राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानवीय क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने के लिए एक ठोस आधार के रूप में कार्य करता है।

राजनीतिक संबंध :

भारत उज्बेकिस्तान की स्वतंत्रता को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक था। दूतावास स्तर (1992) में राजनयिक संबंधों की स्थापना के सिलसिले में प्रोटोकॉल के अनुसार, 1988 में ताशकंद में खोला गया भारत का महावाणिज्य दूतावास 1992 में भारतीय दूतावास में बदल गया था; और नई दिल्ली में उज़्बेकिस्तान गणराज्य का वाणिज्य दूतावास , उज़्बेक दूतावास में तब्दील हो गया।

उज़्बेकिस्तान की आजादी के शुरुआती दिनों से लेकर मौजूदा समय तक उज़्बेकिस्तान गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति इस्लाम करीमोव की भारत में पांच (1991, 1994, 2000, 2005 और 2011) आधिकारिक यात्राएं; भारतीय प्रधानमंत्रियों के तीन (1993, 2006, 2015) उज़्बेकिस्तान के आधिकारिक दौरे; भारत के विदेश मामलों के मंत्रियों के स्तर पर उज़्बेकिस्तान के सात (1996, 1999, 2003, 2009, 2010, 2013, 2018) आधिकारिक दौरे; उज़्बेकिस्तान के विदेश मंत्रियों भारत में चार (1996, 2003, 2004 और 2017) आधिकारिक यात्राएं हो चुकी हैं।

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जुलाई 2015 में उज़्बेकिस्तान की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा की, जो दोनों देशों के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में एक महत्वपूर्ण घटना बन गई। ऐतिहासिक रूप से उज़्बेक-भारत के मैत्रीपूर्ण संबंधों के और विकास को इसने एक मंच प्रदान किया। अपनी यात्रा के दौरान, मोदी ने स्वीकार किया कि मध्य एशिया में उज़्बेकिस्तान भारत के सबसे विश्वसनीय और महत्वपूर्ण साझेदारों में से एक था। प्रमुख क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों को सुलझाने में दो देशों के समान अभिसरण नीति संबंधी स्थितियों को क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय संरचनाओं के बीच द्विपक्षीय बातचीत के लिए एक विश्वसनीय आधार माना जाता है। भारत के प्रधानमंत्री ने 2016 में एससीओ शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए उज़्बेकिस्तान का दौरा किया।

प्रधानमंत्री मोदी और उज्बेकिस्तान के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति शवकत मिर्ज़ियोयेव के बीच आधिकारिक बैठकें 2017 में अस्ताना (कज़ाकिस्तान) में एससीओ शिखर सम्मेलन और 2018 में क़िंगदाओ (चीन) में हुई हैं। इन ऐतिहासिक बैठकों ने द्विपक्षीय संबंधों को और गहरा बनाने और उन्हें गुणात्मक रूप से नए चरण में आगे ले जाने के लिए ठोस उपाय करने का अवसर दिया। माना जाता है कि अक्टूबर 2018 में उज़्बेकिस्तान गणराज्य के राष्ट्रपति मिर्ज़ीयोव की भारत की पहली आधिकारिक यात्रा द्विपक्षीय संबंधों को एक नई गति प्रदान करेगी, विशेषकर अर्थव्यवस्था, व्यापार और निवेश जैसे क्षेत्रों में।

अंतर-संसदीय संबंध भी द्विपक्षीय समन्वय के मुख्य तत्वों में से एक है। उज़्बेक और भारतीय विदेश कार्यालय सहयोग की रूपरेखा के सिलसिले में नियमित आधार पर राजनीतिक परामर्श आयोजित किए जाते हैं। इस तरह के परामर्श का अंतिम दौर मार्च 2017 में दिल्ली में आयोजित किया गया था, जिसके दौरान दोनों देशों के विदेश मंत्रालय ने राजनीतिक, व्यापारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मानवीय क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों की स्थिति के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र और अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों के एससीओ जैसे क्षेत्रीय और वैश्विक प्रारूपों पर व्यापक सहयोग के अवसरों पर चर्चा की। अधिकारियों ने अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर भी विचारों का आदान-प्रदान किया।

इस तरह की अंतर-सरकारी बैठकें क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक और सुरक्षा के मुद्दों, व्यापार के विस्तार, पारस्परिक रूप से लाभकारी आर्थिक परियोजनाओं के कार्यान्वयन; विशेष रूप से उज़्बेकिस्तान के नि:शुल्क आर्थिक क्षेत्र (एफईजेड) में तालमेल बनाने में मदद करती हैं।

अर्थव्यवस्था और निवेश:

उज़्बेकिस्तान भारत को एशियाई महाद्वीप के वृहद्तम देशों में से एक मानता है और विशाल राजनीतिक, आर्थिक, मानवीय क्षमता वाले देश के रूप में और एक ऐसे देश के रूप में भी देखता है जो न केवल विश्व की राजनीतिक; बल्कि आर्थिक समस्याओं के हल में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

हाल ही में, व्यापार और आर्थिक सहयोग (1993), दोहरे कराधान से बचने (1993) और निवेशों के आपसी संवर्धन और संरक्षण (1999) पर ऐसे बुनियादी मामलों में द्विपक्षीय समझौतों द्वारा उज़्बेकिस्तान और भारत के बीच व्यापार और आर्थिक संबंधों को विनियमित किया गया।

व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के लिए आयोग की स्थापना 1993 में हुई, जो उज़्बेक-भारतीय अंतर-सरकारी आयोग इस प्राथमिकता वाले क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग के विकास में योगदान करता है।

ताशकंद में 16 अगस्त 2018 को आयोजित आयोग की अंतिम बैठक में भारत ने उज़्बेकिस्तान के साथ बेहतर व्यापार पर संधि की तैयारी और हस्ताक्षर पर विचार करने और आपसी व्यापार की कुल राशि को एक अरब डॉलर तक पहुंचाने पर अपना उत्साह जाहिर किया।

अगर हम पिछले पांच वर्षों के आंकड़ों पर नज़र डालें तो द्विपक्षीय व्यापार का विक्रय राशि में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है और 2017 के अंत तक यह 323.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर[i] तक पहुंच गया, जिसमें भारत से निर्यात से 32.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर[i] और आयात से 291.1 मिलियन अमेरिकी डॉलर[ii] शामिल है।

विशेषज्ञ साबित करते हैं कि द्विपक्षीय व्यापार में और अधिक वृद्धि तथा दोनों देशों की उत्पाद श्रृंखला को व्यापक बनाने की महत्वपूर्ण संभावना है। इस संबंध में ताशकंद और नई दिल्ली ने 80 मिलियन अमेरिकी डॉलर से भी अधिक मूल्य के 22 अनुबंधों पर हस्ताक्षर किया, जो कृषि उत्पादों, खनिज उर्वरकों, दुर्लभ पृथ्वी धातुओं, रेशम और अन्य सामानों को भारतीय बाजार में प्रदान करने के साथ ही अगस्त 2017 में 70 मिलियन अमेरिकी डॉलर[iii] मूल्य के 20 से भी अधिक निवेश समझौता हुआ।

उज़्बेकिस्तान और भारत के बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्रों में सहयोग का विकास द्विपक्षीय निवेश संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। विशेष रूप से, उज़्बेकिस्तान आधारभूत संरचना और गृह निर्माण के क्षेत्र में परियोजनाओं को लागू करने के लिए भारत के एक्ज़िम बैंक के साथ सहयोग पर विचार कर रहा है।

गौरतलब है, भारतीय पूंजी की भागीदारी वाले 100 से अधिक उद्यम उज़्बेकिस्तान में सक्रिय हैं। हाल में उच्च तकनीकी उत्पादन मिंडा और ओलिव टेलीकम्युनिकेशन की भारतीय कंपनी नि:शुल्क आर्थिक क्षेत्र (एफईजेड) नवोई में सफलतापूर्वक काम करती है। इसके अलावा नोवा फ़ार्म, ब्रावो फ़ार्म, अल्ट्रा हेल्थ केयर और गुफिक अविसेनाइव[iv] के रूप में संयुक्त फ़ार्मास्युटिकल कंपनियां भी हैं।

भविष्य में, संयुक्त परियोजनाओं के कार्यान्वयन में अधिक भारतीय उच्च-तकनीकी कंपनियों को शामिल करने में उज़्बेकिस्तान की दिलचस्पी है, ताकि देश में प्रासंगिक रेडीमेड औद्योगिक आउटपुट का उत्पादन किया जा सके, जिसमें रसायन, दवाएं, कपड़ा और चमड़े के उत्पाद और आईसीटी सामान शामिल हैं। इसलिए, विदेशी निवेशकों के लिए अच्छी स्थिति बनाकर, उज़्बेकिस्तान एग्रेन, जीज़ख, हज़रास्प, कोकंद, गिजुडुवन और उरगुट जैसे एफईजेड में औद्योगिक परियोजनाओं के कार्यान्वयन में शामिल होने के लिए भारतीय व्यापारिक हलकों का स्वागत करता है। हाल ही में (नुक्स- फार्म, ज़ोमिन-फ़ार्म, कोसोनोसे-फ़ार्म, सिरदैरा-फ़ार्म, बोयसुन-फ़ार्म, बुस्टनोलिक-फ़ार्म और पार्केंट फ़ार्म), जो फ़ार्मास्यूटिकल वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्ट हैं, में एफईजेड बनाया गया।

सांस्कृतिक और मानवीय सहयोग:

उज़्बेक और भारतीय राष्ट्र इतिहास, साहित्य, संगीत, चित्रकला और वास्तुकला में समानताओं को साझा करते हैं। जाहिर है, इसमें उज़्बेक राजनेता, कवि और लेखक ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर और उनके वंशजों के नाम जुड़े हैं। उनकी स्थायी विरासत में द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने की एक शक्तिशाली सामार्थ्य है; विशेष रूप से उज़्बेकिस्तान और भारत के बीच वैज्ञानिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर जाने के लिए।

पिछले वर्ष भारत के राष्ट्रीय संग्रहालय ने उज़्बेकिस्तान को बाबर की एक पांडुलिपि दीवान-ए-बाबर की प्रतियां सौंपी थीं, जो 1528 की है। साथ ही 1640 के 'दारा शिकोह की शादी का जुलूस' का लघुचित्र भी। द्विपक्षीय सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए प्रतीकात्मक कदम हैं।

दोनों देशों के बीच सार्वजनिक कूटनीति भी विकसित हो रही है। उज़्बेकिस्तान-इंडिया फ्रेंडशिप सोसायटी, जो सांस्कृतिक संबंधों के विस्तार के लिए एक साधन है, 1991 से ताशकंद में काम कर रही है। निरंतर द्विपक्षीय सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंधों के कारण दोनों देशों के नागरिकों को विभिन्न क्षेत्रों में एक-दूसरे के बारे में व्यापक जानकारी मिलती है।

इसके अलावा, भारतीय शास्त्रीय नृत्य 'कथक', योग और हिंदी भाषा की नियमित कक्षाएं ताशकंद में लालबहादुर शास्त्री के नाम पर भारतीय संस्कृति के केंद्र में आयोजित की जाती हैं। ताशकंद स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ ओरिएंटल स्टडीज में हिंदी पढ़ाई जाती है। संस्थान में महात्मा गांधी के नाम पर भारतीय अध्ययन केंद्र भी है। नई दिल्ली में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में उज़्बेक भाषा के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

जाहिर है, भातर में शिक्षा के क्षेत्र में स्थिति में सुधार हो रहा है, कुछ दक्षिण और पूर्वी एशियाई देशों की तुलना में गुणवत्ता संकेतकों की संख्या अच्छी मानी जाती है। भारत के विश्वविद्यालयों में सबसे लोकप्रिय प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और फार्माकोलॉजी हैं। इस संबंध में, उज़्बेकिस्तान के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने दस से अधिक भारतीय विश्वविद्यालयों और अनुसंधान केंद्रों के साथ सहयोग स्थापित किया है।

उज़्बेकिस्तान को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के कार्यक्रमों के अंतर्गत भारतीय विश्वविद्यालयों में विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए सालाना 25 छात्रवृत्तियां मिलती हैं। अधिकांश उज़्बेक विशेषज्ञों ने अंग्रेजी, बैंकिंग, छोटे व्यवसाय, प्रबंधन, कृषि और अन्य क्षेत्रों में तकनीकी और आर्थिक सहायता (आईटीईसी) v संबंधी भारतीय कार्यक्रमों के कारण भारत में योग्यता प्राप्त की है।

ताशकंद युनिवर्सिटी ऑफ इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में जवाहरलाल नेहरू के नाम पर सूचना प्रौद्योगिकी के भारतीय-उज़्बेक केंद्र की स्थापना की गई है, जिसका उद्देश्य आईटी में प्रोफेसरों और छात्रों को प्रशिक्षित करना है।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच साझेदारी लगातार विकसित हो रही है। अपोलो, आर्टेमिस, मेदांता, मैक्स, बीएलके जैसे भारतीय चिकित्सा संस्थान ताशकंद मेडिकल एकेडमी, ताशकंद मेडिकल इंस्टीट्यूट ऑफ पीडियाट्रिक्स और उज्बेकिस्तान के अन्य विशेष चिकित्सा केंद्रों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करते हैं।

द्विपक्षीय सहयोग में पर्यटन भी एक जरिया है। निश्चित रूप से उज़्बेकिस्तान में विदेशी पर्यटकों का सालाना आवक काफी बढ़ रही है। आंकड़ों के अनुसार, 2017 में हमारे देश में लगभग 3 मिलियन विदेशी पर्यटकोंvi आए, जिसमें 24,000 से अधिक भारतीयvii नागरिक शामिल थे।

इस वर्ष के फरवरी से, उज़्बेकिस्तान ने भारतviii सहित 39 देशों के नागरिकों के लिए पर्यटक वीजा जारी करने की प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाया है। निश्चय ही, इससे भारतीय पर्यटकों को उज़्बेकिस्तान जाने में मदद मिलेगी।

कुल मिलाकर भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करना दोनों देशों के दीर्घकालिक हितों को पूरा करता है। आर्थिक रूप से तेजी से विकसित भारत का उद्देश्य व्यापार, निवेश, उच्च प्रौद्योगिकी और पर्यटन के क्षेत्र में उज़्बेकिस्तान का एक स्थायी भागीदार बनना है। बदले में भारत और उज़्बेकिस्तान के बीच यह न केवल द्विपक्षीय सहयोग के विस्तार और गहरा करने के लिए सभी आवश्यक शर्तों और पूर्वापेक्षाओं का निर्माण करेगा; बल्कि दक्षिण एशियाई देशों के साथ मध्य एशियाई क्षेत्र के संबंध में बातचीत भी करेगा।

***

खंडन: व्यक्त किए गए विचार शोधकर्ता के होते हैं, परिषद के नहीं।

सन्दर्भ

iBusiness forum of representatives of Uzbekistan and India, August 23, 2017, https://mfa.uz/ru/press/news/2017/08/12167/

iiTashkent hosted an Uzbek-Indian business forum, 22.02.2018http://chamber.uz/news/1813

iiiBusiness forum of representatives of Uzbekistan and India 23.07.2017, https://mfa.uz/ru/press/news/2017/08/12167/

ivUmar Asrorov, "Uzbekistan-India: results of consistent cooperation", 04.02.2016, http://uza.uz/ru/society/uzbekistan-indiya-rezultaty-posledovatelnogo-sotrudnichestva-04-02-2016

vUzbekistan-India: new momentum for development, 07.06.2015, http://uza.uz/ru/politics/uzbekistan-indiya-novyy-impuls-dlya-razvitiya-sotrudnichestv-07-07-2015?sphrase_id=2935325

vihttp://uznews.uz/ru/article/8547

viihttp://www.kultura.uz/view_2_r_11961.html

viiiVisa of the Republic of Uzbekistan, https://mfa.uz/ru/consular/visa/